GLOBAL
OUTREACH DAY

प्रत्येक मसीही किसी न किसी का सुसमाचार सुना सकता है!

GLOBAL OUTREACH DAY

प्रत्येक मसीही किसी न किसी को सुसमाचार सुना सकता है !

Imprint:

Author, Text: Werner Nachtigal, Stephan Gängel

English Translation: Steve Greenhill

Design, Layout: Klaus J. Frauenholz, +*kreuz***design**

Photos: Fotolia, 1. Printing 350.000, Printed © 2013 Global Outreach Media

www.globaloutreachday.com Email: info@globaloutreachday.com

विवव्यापी सुसमाचार प्रचार का दिन

पिन्तेकुस्त के पश्चात् प्रत्येक शनिवार

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार के दिन का दर्शन यह है कि एकता में होकर सारे संसार भर में एक साथ सुसमाचार की घोषणा की जाए ।

प्रत्येक मसीही किसी न किसी को सुसमाचार सुना सकता है !
और हम सब मिलकर सारे संसार को जीत सकते हैं !

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार के दिन संसार भर में 80 लाख मसीह कार्यकर्ता सम्मलित हुए थे और उन्होंने 2,50,00,000 लोगों को संसार भर में सुसमाचार सुनाया था और हमने सुना था कि लगभग 30,00,000 लोगों ने यीशु मसीह का अनुसरण करने का निश्चय किया था ।

यह तो मात्र प्रारम्भ है बहुत संख्याओं में कलीसियाऐं और संगठन मिलकर कार्य कर रहे हैं कि इस दिन को सफल बनाया जाए ।

• ऑस्ट्रेलिया में उस दिन एक महिला हवाई जहाज में सफर कर रही थी इस कारण वह परमेश्वर के किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकी । उसने अपने सहयात्री को यीशु के पास पहुॅचने में अगुवाई की ।

• 19 वर्षीय व्यक्ति ने ब्राजील के लगभग 300 शहरों में मसीहियों को क्रियाशील किया ।

• सुसमाचार के द्वारा वेश्यावृत्ति के शहरों में पहुॅचा गया और अब वह क्षेत्र वहॉ पर नहीं है ।

• मंगोलिया में एक महिला 5 माह कोमा में रहने के पश्चात् चंगी हो गई । 3 डाक्टरों ने तब अपने जीवन को प्रभु यीशु के हाथों में समर्पित कर दिया ।

• विद्यालयों , अस्पतालों , व्यक्तियों , शापिंग मॉलों और सडकों पर सुसमाचार का विस्तार किया गया ।

पिन्तेकुस्त : हम पवित्र आत्मा के आने के कारण को सोचते हैं और हम अपने आप को इस योग्य बनाते हैं कि हम परमेश्वर की गवाही को दे सकें ।

" जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे और सारे यरूश्लेम , सारे यहूदिया और सामरिया और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे । "

प्रेरितों के काम 1 : 8

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार का दिन– प्रत्येक वर्ष – पिन्तेकुस्त के पश्चात् प्रत्येक शनिवार को

प्रत्येक इस दिन सुसमाचार सुनाने के लिए सक्रिय रहेंगे ।

परमेश्वर इस दिन साधारण विश्वासी को सुसमाचार सुनाने के लिए चुनौती देता है ।

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार के दिन के लिए तैयारी

इस संसार में यीशु मसीह का सुसमाचार सर्वोत्तम संदेश है और यही केवल उद्धार का मार्ग है इसलिए यहॉ हमारे लिए आवश्यक बन जाता है कि हम लोगों के पास यीशु को ले कर जाएं ।

सुसमाचार के संदेश का केन्द्र कूस पर यीशु की प्रतिस्थापनात्मक मृत्यु और मृतकों में से उसका पुनुरूत्थान है ।

" और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं ; क्योंकि स्वर्ग के नीचे और मनुश्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया , जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें । "

प्रेरितों के काम 4 : 12

कदम एक : संदेा को जानना

मसीह के राजदूत होने के कारण हमें सुसमाचार के चार चरणों को जानना आवयक है – 1 परमेवर की योजना , 2 समस्या , 3 परमेवर का प्रेम , 4 निर्णय

1 परमेश्वर की योजना

परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि मस्तिष्क में एक अद्‌भुत योजना बना कर की कि वह उसकी संगति में सदैव रहेगा ।

सृष्टि के समय संसार में प्रत्येक वस्तु क्रम से थी ।

वहॉ न कोई युद्ध , न अन्याय , न बीमारी , और न कोई पाप था । स्वर्गलोक में मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता के साथ मेल मिलाप के साथ रहता था । यह हमारे लिए परमेश्वर की योजना थी ।

" और परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था , सबको देखा , तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है । "

उत्पत्ति 1 : 31

2 समस्या

मनुष्य ने अपने आपको सृष्टिकर्ता से अलग कर लिया और उसने अपने स्वयं के मार्ग पर चलने का निश्चय किया ।

आज हम उस निश्चय के परिणामों को देखते हैं , एक दूसरे के साथ प्रेम और मेल मिलाप के साथ रहने के स्थान पर , हम घृणा , जलन , बीमारी , और युद्ध में जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु इन दुष्परिणामों से भी अधिक भयावाह बात है कि हम अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से दूर जा रहें हैं । यीशु ने यह बिल्कुल स्पष्ट बता दिया कि मानव जाति परमेश्वर और मनुष्यों के बीच की दूरी को पार करने के लिए किसी पुल का निर्माण नहीं कर सकती । हम कभी भी परमेश्वर की मांग के समीप नहीं जा सकते और इसलिए हम इतनी दयनीय दशा में हैं ।

" कोई धर्मी नहीं , एक भी नहीं क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं । "

रोमियों 3 : 10 , 23

3 परमेश्वर का प्रेम

परमेश्वर पवित्र और न्यायी है फिर भी वह आपसे अनन्तकाल से प्रेम रखता है । इसीलिए उसने वह दंड उठा लिया ताकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए न्याय हो सके और सबका दंड उसने अपने पुत्र के ऊपर लाद दिया । यीशु ने कूस पर आपके पापों का मूल्य चुका दिया ।

" क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया । "

यूहन्ना 3 : 16

4 सबसे महत्वपूर्ण निर्णय

यीशु मृतकों में से जी उठा ! वह जीवित है और आपके प्रतिउत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है । आप कभी भी अपने अच्छे कार्यों के द्वारा , ध्यान के द्वारा , और यहॉ तक कि कलीसिया में जाने के द्वारा भी परमेश्वर के पास नही पहुॅच सकते – परमेश्वर के पास पहुॅचने का केवल एक ही मार्ग है : यीशु की ओर फिरें और उसने जो आपके लिए किया उसे स्वीकारें , उससे क्षमा मांगें और उसके पीछे चलें ।

" परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया , उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया , अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं । "

यूहन्ना 1 : 12

९" कि यदि तू अपने मुॅह से यीशु को प्रभु जान कर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे , कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में जिलाया , तो तू निश्चय उद्धार पाएगा । "

रोमियों 10 : 9

कदम दो : संदेश को प्रसारित करें

यह संदेश ही केवल व्यक्ति को बचा सकता है यदि जो कुछ आपने कहा है वह उसे समझ जाए ।

1 परिस्थितियों को तैयार करें और ध्यान आर्कषित करें

यदि हम अच्छी रीति से बताएंगे , तो हम सुसमाचार के संदेश के लिए व्यक्ति के हृदय को खोल सकते हैं । बुरा वार्तालाप , हालांकि जो पहले खुले हुए हृदय थे उनके द्वारों को बन्द कर सकता है । सबसे पहले , यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति का ध्यान आर्कषित किया जाए इसके लिए सही प्रश्नों के पूछने के द्वारा आप उसका विश्वास अपने ऊपर स्थापित कर सकते हैं । साधारण और प्रत्येक दिन के प्रश्नों से प्रारम्भ करें । उनके पालतू पशुओं के विषय में पूंछें और हाल के समाचारों के विषय में उनके विचारों को पूंछें । इसके द्वारा आपकी सहायता होगी कि आप जान पाएंगे कि वह व्यक्ति किस स्तर पर है और आप इसके द्वारा उससे और अधिक प्रभावशाली रूप से जुड पाएंगे ।

इसके पश्चात् और अधिक व्यक्तिगत प्रश्नों को पूंछें तुरन्त यीशु से प्रारम्भ न कर दें । पूंछें , " आप परमेश्वर के विषय में क्या सोचते हैं ? " या " व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर आपके लिय क्या मायने रखता है ? " नकारात्मक उत्तरों से विचलित न हों । कभी कभी आपके साथ ऐसा हो सकता है , क्योंकि परमेश्वर ने आपको स्वतंत्र इच्छा दी है । शान्त रहें ! आप घोडे को पानी के पास ले कर आ सकते हैं , परन्तु आप उसे पानी पीने के लिए विवश नहीं कर सकते ।

इसके अतिरिक्त आप अच्छे और रोचक प्रश्नों को पूंछें , उनके ध्यान को आर्कषित करने के लिए आप निम्नलिखित भी कर सकते हैं :

• भले कार्य • छोटे उपहार • .....

विचारों की सूची रखें कि कैसे आप एक अजनबी के ध्यान को आर्कषित कर सकते हैं । उनकी क्षेत्रीयता और विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रख कर आप अपनी रणनीति तैयार करें । अलग अलग परिस्थितियॉ अलग अलग उपायों की मांग करती हैं ।

2 रोचकता का निर्माण करें और वार्तालाप में तीव्रता को लाएं

एक बार आपने व्यक्ति का ध्यान आर्कषित कर लिया , आपका अगला कदम उसकी जिज्ञासा को और अधिक बढाना है । सही प्रश्न पूछने के द्वारा और सही सूचनाओं को प्रदान करने के द्वारा आप उनकी जिज्ञासाओं को और अधिक बढाते हैं । जब आप ऐसा अनुभव करते हैं कि वह जिज्ञासू हो गए हैं तब आप लगातार प्रश्न पूंछ कर उसके ऊपर निर्माण कर सकते हैं । उनकी जिज्ञासा को छोटे और पालतू उत्तरों के द्वारा शान्त न करें । प्रश्न पूंछने के द्वारा , आप वार्तालाप की अगुवाई कर रहें हैं और अनन्तः आप व्यक्ति को यीशु के पास लेकर जा सकते हैं ।

हालांकि लगातार बोलने के द्वारा उनकी जिज्ञासा को कम न करें। परमेश्वर ने आपको एक मुॅह और दो कान दिए हैं इसका अर्थ कि आप जितना बोलते हैं उससे दुगना सुनें । जिज्ञासा तब प्रमाणित हो जाती है जब व्यक्ति अपने ह्रदय को खोलना प्रारम्भ कर देता है और अपनी कहानी बताता है । उस समय के दौरान , शान्त रहें , सुनें और मन में सही प्रतिउत्तर के लिए प्रार्थना करें।

3 यीशु के पीछे चलने की इच्छा का निर्माण करें

यदि एक मछली पकडने वाला सफल होना चाहता है तो ,मछली पर आक्रमण करने के लिए छद्म चारा डालता है इससे पहले कि वह वास्तविक चारा डाले । यदि हमने उस व्यक्ति के विषय में जिससे हम बात करने जा रहे हैं उसके विषय में पहले से ही खोज करने में समय व्यतीत किया है तब हम जानते हैं कि उनकी आवश्यकता क्या है और वार्तालाप को किस दिशा में निर्देशित करना है ।

हमें यह जानने की आवश्यकता है कि यीशु के बिना व्यक्ति अपने जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु को खो देता है । अपने विश्वास का अभ्यास करें और ऐसी कल्पना करें कि वह व्यक्ति यीशु को ग्रहण करना चाहता है । यदि आप ऐसा महसूस करते हैं तो अपनी कुछ कहानियॉ उसको बताएं यहॉ तक कि यदि आपके साथी के पास कुछ विशेष आवश्यकताऐं हैं तो आप उन आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने का निमंत्रण दे सकते हैं ।

उन संकेतों के प्रति जो वह भेज रहे हैं कि वह इच्छुक हैं संवेदनशील रहें । यह अति आवश्यक है कि आप उन संकेतों को पकड सकें और उनका प्रयोग सही प्रश्न पूंछने के द्वारा कर सकें ।

प्रभावशाली रूप से दूसरी ओर संदेश पहुॅचाने के लिए , यह नियम याद रखें : " उनसे यह न कहें , पूछो !

उदाहरण के लिए : " यीशु आप के लिए क्रूस पर मरा । क्या आप जानते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया ? " यह खोजें कि वह व्यक्ति किस स्थिति में है , अपनी स्वयं की गवाही बताएं और उसके हृदय में इस इच्छा को पोषित करें कि वह कह सके " मैं इसे चाहता हूॅ ! "

कदम तीन : संदेा का प्रतिउत्तर प्राप्त करें

1 उनके निर्णय के विषय में पूंछें

अब हम उन क्षणों में पहुॅच गए हैं जहॉ आपका कार्य प्रतिउत्तर की मांग करता है । इस कदम से भयभीत न हों ! साधारणतया कहें : " क्या आप अब परमेश्वर के साथ सही होना चाहते है ?

" सो हम मसीह के राजदूत हैं : मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं , कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो । "

2 कुरिन्थियों 5 : 20

प्रत्येक वार्तालाप की समाप्ति के पश्चात् हमेशा प्रतिउत्तर होना चाहिए । उस व्यक्ति को चुनौती दें जिससे आप बात कर रहें हैं कि वह निर्णय ले । अधिकतर मसीह लोग इस बिन्दु पर बहुत अधिक संकोच प्रकट करते हैं । यदि आपका साथी जो वह कह रहा है उसका अर्थ रखता है , तो वह निश्चय निर्णय लेंगे ।

आवश्यकताओं को समझाऐं और उन्हें यीशु के पीछे चलने का स्पष्ट निमंत्रण दें :

1 क्या आप विवास करते हैं कि यीु आपके पापों के कारण क्रूस पर मर गया ? – " हॉ "

2 क्या विवास करते हैं कि यीु मृतकों में से जी उठा ? – " हॉ "

3 क्या आप इस समय इच्छा रखते हैं कि आप यीु को अपने हृदय में ग्रहण करेंगे ? – " हॉ "

व्यक्ति के साथ प्रार्थना करने में हिचकिचायें नहीं । सब कुछ कहा गया है । हम किसी भी व्यक्ति के ऊपर पर दबाव नही डालना चाहते और न ही किसी के साथ चालाकी करते हैं परन्तु इन सबके बावजूद हम किसी प्रकार के क्लब से जुडने की बात नहीं कर रहे हैं – यह जीवन और मृत्यु का प्रसंग है !

2 उनसे कहें कि वह आपके पीछे प्रार्थना करें।

अब आप दूसरे व्यक्ति से आपके पीछे उच्च स्वर में प्रार्थना करने के लिए कहें । उससे कहें कि वह अपनी ऑखें बन्द करे और उच्च स्वर और स्पष्ट रूप से इस प्रकार प्रार्थना करे :

यीशु , मैं विश्वास करता हूँ कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं । मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पापों के लिए मारे गए । कृप्या मुझे क्षमा प्रदान करें और मेरे हृदय में आएं । मैं विश्वास करता हूँ कि आप मृतकों में जी उठे और आज भी जीवित हैं । मैं आपको अपना उद्धारकर्ता और प्रभु मान कर ग्रहण करता हूँ । मैं अपने जीवन भर तेरे पीछे चलूँगा । आमीन ।

3 उनसे पूंछें कि क्या वह जानते हैं कि उन्होंने क्या किया।

यह आपके लिए वह समय है कि जब आप उनको उनके निर्णय में मजबूत करते हैं । यह बहुत आवश्यक है कि वह इस निर्णय को सुदृढ करें । प्रार्थना , फॉलोअप , और संगति भी बहुत आवश्यक है परन्तु इस क्षण हम उन क्षणों की बात कर रहें हैं कि जबकि कुछ मिनटों पहले व्यक्ति ने यीशु को ग्रहण किया है । इस बात को सुनिश्चित करें कि उन्हें एहसास हो कि उनका निर्णय कुछ मायने रखता है ।

अन्ततः , आप अपने संपर्क विवरण को एक दूसरे के साथ बॉटें और अगले 72 घंटों में पुनः मिलने के लिए समय निर्धारित करें । नए विश्वासी को कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं के विषय में समझाऐं

1 बाइबिल परमेवर का वचन है । प्रत्येक दिन बाइबिल पढें ।

2 प्रार्थना – परमेवर से प्रत्येक दिन बात करें ।

3 कलीसिया – उन लोगों को खोजें जिनके साथ आप अपने विवास को बॉट सकें ।

कार्यान्वित कदम

प्रत्येक मसीही किसी न किसी को सुसमाचार सुना सकता है!
यहॉ अनगिनत संभावनायें हैं कि इस दिन किसी के पास पहुॅचा जा सके ।

एक एक करके –किसी को चाय पर आमंत्रित करें और उसे यीशु के विषय में बतायें ।

दो दो करके – आप अपनी कलीसिया में मिलें और उसे छोटे समूह में विभाजित कर दें । उसके पश्चात् दो दो करके बाहर लोगों के पास जाएं – सडकों पर , बाजार के स्थानों में , अस्पतालों में इत्यादि।

देखभाल और बॉटना – किसी के प्रति कुछ अच्छा करें और उसके पश्चात् उसके साथ कुछ अच्छा बॉटें ।

अपने क्षेत्र को जीतें – आप योजना बनायें कि कैसे आप निश्चित क्षेत्र को जीतेंगे । दरवाजे से दरवाजे और घर घर में पहुॅचें और उन मार्गों के विषय में सोचें कि कैसे आप सुसमाचार के साथ उन तक पहुॅच सकते हैं ।

ए से जेड तक विचार – आप खुले मैदानों में सभाओं का आयोजन कर सकते हैं , सुसमाचार सुनाने के लिए जेलों में जाएं , शापिंग मॉलों में जाएं , अनाथालयों में जाएं । यहॉ बहुत सारे मार्ग हैं जिससे आप लोगों तक पहुॅच सकते हैं ।

और अधिक विचारो को खोजें और उन्हें www.globaloutreachday.com पर भेज दें

यह दिन सारे संसार को बदल सकता है और परमेश्वर आपको प्रयोग करेगा कि आप अपने पडोसी और राष्ट्र के लिए आशीष ठहरें ।

प्रत्येक मसीही किसी न किसी को सुसमाचार सुना सकता है। और हम सब मिलकर सारे संसार को जीत सकते हैं !

प्रत्येक मसीही किसी न किसी का सुसमाचार सुना सकता है!

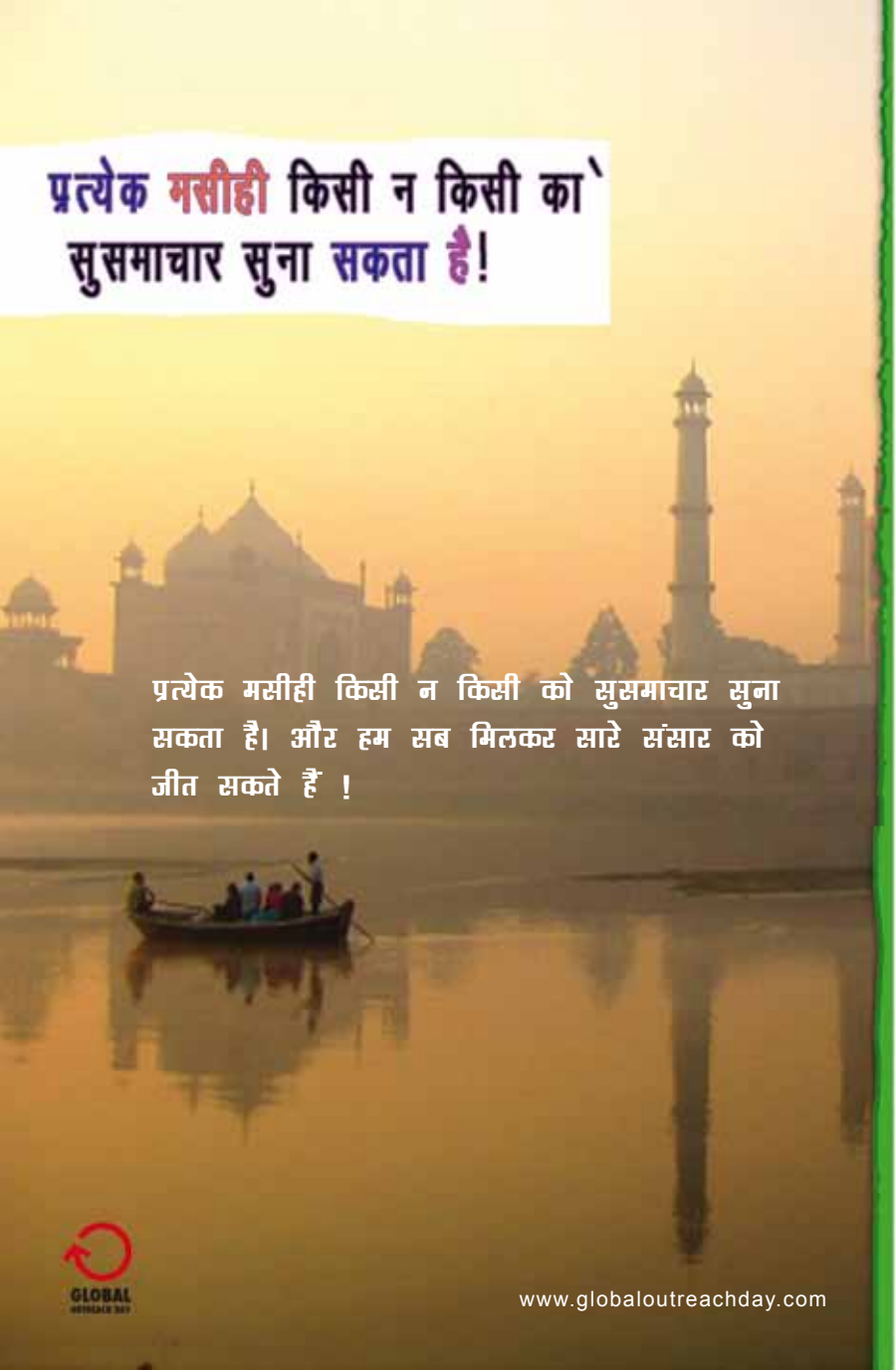

प्रत्येक मसीही किसी न किसी को सुसमाचार सुना सकता है। और हम सब मिलकर सारे संसार को जीत सकते हैं !

GLOBAL OUTREACH DAY

www.globaloutreachday.com